शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार में आकाशवाणी का योगदान

ज्योति उपाध्याय
(शोधार्थी) पीएच.डी
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, संगीत विभाग
एम.बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

१. प्रस्तावना

जब रेडियों का प्रारम्भ हुआ तब संगीत का प्रसारण रेडियों के द्वारा होना एक नए युग की शुरूआत मानी जाती है। भारत में पहले से संगीत का प्रदर्शन पूर्ण रूप से मात्र मंचों पर ही निर्भर हुआ करता था किन्तु प्रसारण परम्परा एवं आधुनिक भारत की शुरूआत से संगीत को पुराने काल में जो शासक या चक्रवर्ती सम्राठों एवं बड़े –बड़े रईसी लोगों के मनोरंजन का साधन माना जाता है एवं इस पर उन्हीं का एकमात्र अधिकार जड़ा जाता है आकाशवाणी एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। साधारण जन के लिए इसका अधिकार लगभग वर्जित ही था अन्य सभी संचार माध्यमों की अपेक्षा रेडियो अत्यधिक प्रभावशाली माध्यम माना गया है। रेडियों के द्वारा संगीत सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन सभी जनमानस तक पहुँच पाया है। यह एक बहुत बेहतरीन एवं अत्यन्त प्रभावशाली माध्यम के रूप में जाना जाता रहा है। यदि हम वर्तमान काल में इसकी तुलना करें तो यह आज के काल में भी नई तकनीक एवं आधुनिकता का सृजन कर रहा है। आधुनिक एवं नई तकनीक के इस युग में भी यही कारण है कि लोगों को आज भी रेडियों लुभाता है।

२. आकाशवाणी का प्रारम्भ

रेडियो का अविष्कार 20वीं सदी में किया गया था, उस हिसाब से रेडियों की उत्पत्ति एवं रेडियों के विकास की प्रक्रिया काफी जटिल एवं रोचक दिखती है। परन्तु वास्तविकता में सन् 1815 ई. में ही रेडियों के उदगम एवं विकास की कहानी प्रारम्भ हो गई थी।

स्न 1922 में प्रसारण कम्पनी की स्थापना ब्रिटेन में की गई। 'British Broadcasting Company' नाम सं इस कम्पनी की स्थापना की गई। परन्तु बाद में निगम का रूप दिए जाने के कारण 1 जनवरी 1927 ई. को इसका नाम बदल दिया गया। इसका नाम बदल कर 'British Broadcasting Corporation' कर दिया गया। सन् 8 जून 1936 ई. में ब्रिटिश सरकार द्वारा आकाशवाणी का नाम बदलकर 'All India Radio' के रूप में कर दिया गया। जब भारत सन् 15 August 1947' को स्वतंत्र हुआ तो उसके कुछ समय पश्चात् ही देशी रियासतों के Radio Station 'All Indian Radio' में सम्मिलित कर लिए गए। मैसूर की सरकार द्वारा रेडियों को आकाशवाणी का नाम दिया गया । इस प्रकार उसे 'All India Radio' के लिए सामान्य रूप से अपना लिया गया। वर्तमान काल में Radio अंग्रेजी में 'All India Radio' व भारतीय भाषा में ' आकाशवाणी' नाम से जानी जाती है। 15 अगस्त सन् 1947 ई. को भारत आजाद हुआ। भारत में स्वतंत्रता के समय केवल 6 रेडियो स्टेशन थे। इनकी स्थापना **मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, लखनऊ और तिरूचिरापल्लि** में की गई थी। इन 6 स्टेशनों के अलावा रजवाड़ों में भी कुल पांच ही रेडियो स्टेशन काम कर रहे थे। भारत के नेताओं ने स्वतंत्रता के बाद अपनी संस्कृति की ओर ध्यान दिया और भारतीय गीत–संगीत और संस्कृति से संबधित कार्यक्रमों का प्रसारण प्रचुर मात्रा में होने लगा।

सूचना एवं प्रसारण मंत्री मानवीय आर. एस. दिवाकर ने सन् 1950–51 ई. में शास्त्रीय संगीत के उत्थान के लिये संगीत के विद्वानों और 'All India Radio' के सदस्यों ने शास्त्रीय संगीत के विकास को लेकर कई सराहनीय कदम उठाए। अक्टूबर सन् 1952 ई. में इसी बीच रेडियो के वाद्यवृन्द का गठन हुआ। 8 जुलाई 1952 इ. को रेडियो के मुंबई केन्द्र पर संगीत एंकाश की स्थापना की गई।

३. आकाशवाणी के मूलभूत उद्देश्य

आकाशवाणी के कई उद्देश्य है परन्तु यदि हम मूलभूत उद्देश्यों की बात करे तो जनमानस में सुगम संगीत एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत दोनों को ही समझने और श्रवण करने की इच्छा पैदा करना इसके मूलभूत उद्देश्यों में से एक है एवं हमारे भारतीय संगीत की पुरानी गरिमा एवं स्वाभिमान को पुर्नजाग्रत करना भी है।

इसका उद्देश्य जनमानस में अनुशासित श्रवण की प्रवृत्ति को उभारना और इसके साथ ही इससे जुड़े कलाकारों को नई जीवन पद्धति के अनुसार अपने संगीत प्रदर्शन की कला को समायोजित करने की आवश्यकता का ज्ञान करवा कर ही उपयुक्त सफलता संभव हो पाई है।

मुख्य रूप से आकाशवाणी का उद्देश्य उत्तर एवं दक्षिण दोनों ही संगीत की पद्धतियों की गायन एवं वादन की भारतीय संगीत की विधाओं का पोषण करना है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आकाशवाणी ने सुगम फिल्मी लोक एवं भक्ति संगीत जैसी कई अलग–अलग सांगीतिक विधाओं का पोषण करना है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आकाशवाणी ने सुगम फिल्मी लोग एवं भक्ति संगीत जैसी कई अलग – अलग सांगीतिक विधाओं को प्रोत्साहित करने के लिए अत्यंत प्रशंसनीय प्रयत्न किए है। मुख्य रूप से शास्त्रीय संगीत के पोत्साहन के विकास एवं प्रस्तुति और उसकी लोकप्रियता में ही उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

विभिन्न परम्पराओं एवं रूचियों वाले भारतवर्ष में देश के विभिन्न क्षेत्रों के असमान होने के कारण भी आसाम में स्थित श्रोता दक्षिण भारत में बजने वाली वीणा पर मंत्रमुग्ध हो जाते है एवं उड़ीसा में स्थित श्रोता पंजाब के लोक गीतों पर झूम उठते है। आकाशवाणी फिल्मों में पाए जाने वाले सस्ते संगीत एवं शास्त्रीय संगीत सीखने व समझने वालों के लिए गंभीर रूप से चिंतित था।

शास्त्रीय संगीत को सीखने व समझने के लिए आवश्यक मानसिक अनुशासन एवं निरन्तर प्रयत्न के अभाव के कारण शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों की अभिरूचि कुछ कम हो रही थी अंत में इस समस्या के निदान के लिए ऐसे मार्ग और साधन अपनाए गए कि शास्त्रीय संगीत को और अधिक लोकप्रिय बनाया जाने लगा।

वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत के संरक्षण हेतु कई व्यवस्थाएं की गई। जिसके अन्तर्गत उसके तात्विक विकास, व्यापक प्रचार एवं प्रसार और कलाकारों व श्रोताओं के बीच एक सामंजस्य स्थापित करने में निःसंदेह आकाशवाणी एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। आकाशवाणी के प्रमुख केन्द्रों के साथ–साथ अब स्थानित केन्द्रों में एवं देश के अनेक राज्यों में आकाशवाणी के केन्द्रों को खोला जाना उद्देश्य था।
स्थानान्तरित केन्द्रों में आकाशवाणी के स्थापना करने देश के दूर स्थित स्थानों तक संगीत श्रवण को सभी के लिए सुलभ बनाना और इस प्रकार साधारण जनसमूह में भी शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता, रसिक, विवेचक, विद्यार्थीवर्ग, श्रोता, शोधार्थी वर्ग एवं सभी कलाकारों के लिए अन्य सभी कलाकारों को सुलभ बनाना आकाशवाणी के द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों से ही संभव हो पाया है। अतः शास्त्रीय संगीत को सामान्य जनजीवन तक उसके पूर्ण रूप में सम्पर्क में लाने का सारा श्रेय आकाशवाणी को ही दिया जाता है।

यदि हम समीक्षात्मक दृष्टि से इसे देखें तो अनेक संस्थाएं, संगीत संबधी केन्द्रों के द्वारा समय –समय पर संगीत से संबधित सम्मेलनों व संगीत सभाओं का आयोजन होता रहा है। परन्तु यह एक सीमित परिधि में

ही ये संस्थाएं कार्य कर पाती है। इसकी तुलना में आकाशवाणी प्रसारण का माध्यम होने के कारण संगीत सम्मेलनों को संगीत प्रतियोगिताओं, अखिल भारतीय संगीत के कार्यक्रमों को विशाल स्तर पर व्यवस्थित रूप से आयोजित कर पाता है। आकाशवाणी के लिए विधि केन्द्रों पर क्षेत्रीय कलाकारों से संपर्क करना भी अन्य संस्थाओं की तुलना में अधिक सुलभ है। साथ ही प्रशासनिक सहायता मिलने के कारण भी आकाशवाणी शास्त्रीय संगीत की न केवल एकल गायन वादन बल्कि अन्य विधाओं के साथ शास्त्रीय संगीत पर निर्भर सुगम संगीत की अन्य विधाओं का प्रसारण भी एक प्रकार से शास्त्रीय संगीत की अधिक से अधिक लोकान्मुख करने के ही प्रयास कहे जा सकते है। यह प्रयास केवल शास्त्रीय संगीत का प्रचार मात्र ही नहीं बल्कि इसे परोक्ष रूप से भी संगीत ही अनौपचारिक शिक्षा भी मानना असंगत प्रतीत नहीं होता।

४. शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार में आकाशवाणी का योगदान

लगभग 1952 से 1955 के दौरान शास्त्रीय संगीत के लोकप्रियकरण एक नारा बन गया। लगभव सभी केन्द्र शास्त्रीय संगीत को और लोकप्रिय बनाने के लिए अपने कलात्मक स्रोतों की सीमाओं से बढ़कर जो भी उन्हें शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिये आवश्यक लगा वह किया। उन केन्द्रों द्वारा किये जाने वाले कार्य की समय–समय पर जानकारी प्रदान करने के लिये निर्देश भी दिये गए। इसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय अभिरूचियों की परवाह न करते हुए शास्त्रीय संगीत के प्रसारण में वृद्धि करना सरल था। जबकि इससे उनकी लोकप्रियता को अधिक क्षति पहुँची। सांयकालीन प्रसारणों में अन्य कार्यक्रमों के साथ–साथ उपशास्त्रीय संगीत के स्थान पर शास्त्रीय संगीत चलाया जाने लगा।

ऊपर बताई गई नीति एवं दृष्टिकोण के आधार पर आकाशवाणी द्वारा संगीत से जुड़े कार्यक्रमों को अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि शास्त्रीय संगीत से जुड़ी प्रसारणों की संख्या में वृद्धि करने के साथ–साथ इनकी गुणवत्ता की और अधिक परिमार्जित करने की दिशा में भी प्रयत्न किए गए।

शास्त्रीय संगीत को और अधिक लोकप्रिय बनाने हेतु आकाशवाणी के द्वारा संगीत से संबधित कार्यक्रमों का विस्तार करने से यह स्पष्ट होता है कि शास्त्रीय संगीत के इस प्रसारणों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ इसकी गुणवत्ता को परिमार्जित करने की दिशा में भी प्रयत्न किए गए है।

शास्त्रीय संगीत को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए आकाशवाणी के द्वारा संगीत से जुड़े ऐसे कई कार्यक्रम प्रसारित होते है। जो शास्त्रीय संगीत पर आधारित होते है या फिर शास्त्रीय संगीत के ही अन्य रूप होते है। जन साधारण में इन कार्यक्रमों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के प्रति रूचि पैदा करने व उनका रूझान भी इस ओर करने में निरन्तर बढ़ाने में बहुत सहायक हुई है।

आकाशवाणी ने पूर्ण रूप से इन सभी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए इन्हें साथ लेकर चलने का प्रयास किया या यूं कहे कि इन सबके विपरीत रूप में आकाशवाणी द्वारा यह सभी स्थितियां कहीं न कहीं एक हद तक संभव हुई है। अतः यह कहना कि शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं विकास का सारा श्रेय आकाशवाणी को जाता है असंगत होगा, क्योंकि इस विषय में प्रशासन द्वारा भी ऐसे अनेक कदम उठाए गए जहाँ शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहन देने के लिए सर्वश्रेष्ठ साबित हुए है। उदाहरणस्वरूप विद्यालयों की स्थापना, सांस्कृतिक शिष्ट मंडलों को विदेश भेजना, प्रतिवर्ष छात्रवृत्तियों का वितरण, संगीत अकादमियों की स्थापना, शिक्षा मंत्रालय एवं प्रांतीय शिक्षा विभागों तथा विश्वविद्यालयों में संगीत को एक विशेष रूप में मान्यता देना।

संगीत गोष्ठियों, संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया जाना व प्रकाशन संस्थाओं , संगीत संस्थाओं के द्वारा संगीत से संबधित लेख प्रकाशित करना परन्तु फिर भी शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने का कार्य व जन–जन तक पहुँचाने का सारा श्रेय आकाशवाणी का ही है। सन् 1952 ई. 20 जुलाई को संगीत के अखिल भारतीय कार्यक्रम को प्रसारित किया गया। रेडियो के रंगमंच पर उत्तर भारतीय एवं कर्नाटकी संगीत के समस्त सर्वश्रेष्ठ कलाकारों द्वारा अपनी राज्य की कला का प्रदर्शन किया गया। इसके द्वारा संगीतज्ञों में एक नई प्रेरणा एवं एक नए उत्साह और नई स्फूर्ति का भी उदय हुआ। अखिल भारतीय

रेडियो ने भारतीय संगीत को सर्वसाधारण के लिये आकर्षण बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। उसमें सुगम–संगीत का निर्माण भी किया गया जो कि चित्रपट संगीत की लोकप्रियता से स्पर्धा करते हुए भी उसकी कमियों को अछूता रहा और बिना संदेह के ही संगीत का यह रूप आज समाज में अत्यधिक प्रचलित है। सुगम संगीत को बड़े उत्साह से जनता ने अपनाया और संगीत भी चित्रपट संगीत के समान ही जनप्रिय हुआ।

सन् 1952 से 1961 ई. का काल बी0वी0 केसकर का रहा। इनके प्रयासों द्वारा संगीत एवं रेडियो कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे और विकास का एक नया दौर चला। इसी कारण इस काल के संगीत के प्रसारण की दृष्टि से रेडियो का स्वर्ण युग कहा जाने लगा। नई दिल्ली में सन् 1953 ई. को संगीत नाटक अकादमी की स्थापना की गई। 28 जनवरी सन् 1954 ई. को इसका उद्घाटन किया गया। सन् 1956 ई. में ओपेरा का अखिल भारतीय कार्यक्रम भी शुरू किया गया।

संगीत व उससे जुड़े अनेकों कार्यक्रमों का भी सीधा प्रसारण रेडियो द्वारा ही किया जाता है। किसी भी देश–प्रदेश में हो रहे कार्यक्रमों को इस परम्परा के अनुसार आकाशवाणी द्वारा श्रोताओं के सामने पेश किया जाता है। इस तरह के कार्यक्रम पहले से तैयार नहीं होते है। बल्कि कार्यक्रमों को वर्तमान समय के रूप में श्रोताओं के सामने प्रस्तुत किया जाता है। प्रतिं वर्ष रेडियो आमंत्रित किए हुए श्रोताओं के सामने रेडियो संगीत सम्मेलनों का आयोजन कराती है। इन सम्मेलनों में शास्त्रीय संगीत से जुड़े बड़े–बड़े कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है एवं नए कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए संगीत सम्मेलनों से पहले संगीत से जुड़ी प्रतियोगिताओं का आयोजन भी करवाया जाता है।

संगीत सम्मेलनों में कलाकार सीधे श्रोताओं के सामने अपनी–अपनी प्रस्तुति देते है। सभी श्रोतागण इसका लाभ उठाते है व कलाकार भी श्रोताओं की रूचि व उनके मिजाज के अनुसार कार्यक्रम मी रचना करते हैं व इसका एक लाभ यह भी है कि कलाकार श्रोताओं की इच्छा को जानते हुए कार्यक्रम की अवधि को घटा–बढ़ा सकते है। इसके विपरीत रेडियो पर कलाकारों को निश्चित अवधि तक गाना होता है। उन्हें इस प्रकार के लाभ प्राप्त नहीं हो पाते। जिस कार्यक्रम का निर्माण करना होता है एवं उसको प्रस्तुत करना होता है उस कार्यक्रम कि अवधि तथा समय पहले से ही निर्धारित होता है। इसमें बदलाव की संभावना ना के बराबर होती है। इसके बावजूद भी कलाकार आकाशवाणी में इस प्रकार के कार्यक्रम देना पसंद करते है व श्रोतागण भी संगीत सम्मेलनों व सीधे प्रसारण की प्रस्तुति उन्हें बड़ी मनभावन लगती है।

आजकल के समय में भी किसी भी कार्यक्रम से जुड़ी घोषणा की जाती है तो उन कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण भी करती है। ऐसे में श्रोताओं की जिज्ञासा और अधिक बढ़ जाती है जहाँ रेडियो समाज के लिए इस तरह के कार्यक्रमों को प्रसारित करने में अनेक जोखिम उठाने पड़ते है ठीक उसी प्रकार इस तरह के कार्यक्रम समाज को एक नया जीवन प्रदान करते है।

दूरदर्शन की तरह रेडियो पर भी आज के युग में सच्चाई को प्रसारित किया जा सकता है। इस प्रकार के कार्यक्रम आजकल के युवाओं को रेडियो की ओर आकर्षित करते है एवं इसको लोकप्रिय बनाने में और अधिक सक्षम हो सकते है।

५. सारांश

आकाशवाणी का महत्वपूर्ण कार्य न केवल योग्य कलाकारों को समाज के करीब लाना था बल्कि समाज में उनको एक प्रतिष्ठा एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में परिचय करवाना भी था जैसे कुछ कलाकार संगीत संस्थाओं के संम्पर्क से शास्त्रीय संगीत के प्रेमी श्रोताओं के एक छोटे वर्ग के बीच ही अपनी कला का कौशल दिखा पाने में समर्थ थे। उन्हीं कलाकारों को आकाशवाणी एक ही समय पर संगीत के अन्य रसिक वर्ग के लिए उपलब्ध कराती थी। इसी प्रकार इस प्रचार माध्यम से जो श्रेष्ठ कलाकारों की राष्ट्र में अपनी एक अलग पहचान व अपना एक विशेष स्थान बनता है यह आकाशवाणी के साथ –साथ अन्य सभी श्रेष्ठ

कलाकारों के लिए भी गर्व की बात है। अतः शास्त्रीय संगीत व शास्त्रीय संगीत के कलाकार दोनों को ही मान व सम्मान और प्रतिष्ठा दिलाते हुए शास्त्रीय संगीत को उन्नति के पथ पर ले जाने का काम आकाशवाणी ने किया है। निःसंदेह यह कार्य सराहनीय है।

आकाशवाणी ने मनोरंजन व सूचना का एक माध्यम होने के साथ ही जनमानस की परम्पराओं एवं उपलब्धियों में निहित नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर भी जोर दिया है एवं उन्हें प्रकाशित भी किया है। शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण के कारण आकाशवाणी द्वारा परम्परा का निर्वाह जनसमुदायों में आकाशवाणी के लिए समझ व अभिरूचि का संचार श्रोताओं के लिए योग्य संगीतज्ञों की अद्भुत कला का प्रसार हुआ है इसी कारण आकाशवाणी एक महान संयोजक शक्ति के रूप में उभर कर आई है। जैसे की हम सभी जानते है कि भारत अनेकताओं में एकता का देश है। इसी एकता को बनाने एवं विभिन्न अभिरूचियों और परम्पराओं को आपस में जोड़ने का काम आकाशवाणी द्वारा बहुत सुंदर रूप से किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. दूरदर्शन विविध आयाम, सुशील कुमार सिन्हा, राज पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
२. सूचना समाज एवं संचार, धर्मेद्र सिंह, नेहा पब्लिकेशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
३. प्रसारण एवं फोटो पत्रकारिता, ओम गुप्ता, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
४. प्रसारण तकनीकी, विजय शर्मा, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
५. जनसंचार एवं पत्रकारिता, डा. रेशमा नदाफ, संजय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
६. विज्ञान शिक्षण तकनीकी और कम्प्यूटर हेमंत कुमार, इंडिपेंडेंट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
७. रेडियो और संगीत, अशोक कुमार यमन ,कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
८. Radio Broadcasting: A reader's Guide Dr. K. Parameswaran, Authors press Hauz Khas, New Delhi.
९. Broadcasting and Development Communication, Ved Prakash Gandhi, kanishka Publishers & distributers, New Delhi.